सलई गोंद का सतत् विदोहन, प्राथमिक प्रसंस्करण, श्रेणीकरण एवं विपणन

प्रस्तावना

भारत एक कृषि प्रधान देश है। भारत की लगभग 64 प्रतिशत जनसंख्या कृषि एवं वनों से अपनी आजीविका चलाती है। वनों से प्राप्त होने वाली वस्तुएं मुख्य रूप से गोंद, तेंदूपत्ते, कंद, फूल, रेशे इत्यादि है। ये उत्पाद विविध प्रकार की वनस्पतियों से प्राप्त की जाती है।

सलई का वानस्पतिक नाम ***Boswellia serrata*** है। इसको सालई, चींड आदि नामों से भी जाना जाता और यह बुर्सेरेसी कुल का सदस्य हैं। यह एक मध्यम आकार का वृक्ष है, जिसकी उंचाई 12.15 मीटर होती हैं। इसमें फूल फरवरी में आते है एवं अप्रेल में फल परिपक्व हो जाते हैं। सलई वृक्ष मुख्यत: मध्यप्रदेश, महाराष्ट्, गुजरात, उड़ीसा, आदि प्रदेशों में बहुतायत से पाया जाता है। मध्य प्रदेश में यह मुख्यत: श्योपुर, शिवपुरी, खंडवा, खरगोन एवं बुरहानपुर जिलों में पाया जाता है। यह बहुत ही उपयोगी वृक्ष है। इससे प्राप्त होने वाली गोंद वनांचलों में रहने वाले लोगों की आजीविका का एक मुख्य साधन है।

सलई गोंद का उपयोग

इससे प्राप्त होने वाली गोंद का उपयोग पेंट एवं टेक्सटाइल, फार्मा उद्योग व अगरबत्ती निर्माण में होता हैं। इसके गोंद से बोसवेलिक अम्ल निकाला जाता है जिसका उपयोग गठिया रोग एवं अन्य रोगों के उपचार में होता हैं। इसकी छाल का उपयोग पूजन एवं हवन में होता हैं।

विदोहन का तरीका

1. पंरपरागत विधि – इस विधि में सलई के वृक्षों पर सितम्बर. अक्टूबर माहों में बंध लगाया जाता है। बंध की चौड़ाई 15–20 से. मी. तक होती है और बंध वृक्ष की गोलाई में लगाया जाता है। लगाए गए बंध को 15 – 30 दिन तक छोड़ दिया जाता है इस प्रकिया को पेंड़ पकाना कहते है। इसके बाद फिर उस बंध के ऊपर 5–6 से.मी. का बंध लगाया जाता है। कुछ दिनों बाद उस बंध से गोंद निकलने लगता है। तीन–चार दिनों बाद गोंद को पेड़ से निकाला जाता है और फिर से उसी बंध के ऊपर 5–6 से.मी. चौडाई का बंध लगा दिया जाता है। यह प्रकिया माह में 5–6 बार दोहराई जाती है। गोंद निकालने के लिए सलूली नामक उपकरण का उपयोग किया जाता है। गोंद निकालने की यह विधि सलई वृक्षों के लिये हानिकारक है क्योंकि गोंद निकालते समय न तो पेड़ की मोटाई और न ही गहराई पर ध्यान दिया जाता है, इस कारण कुछ वृक्ष सूख भी जाते है। इससे सलई वृक्ष धीरे–धीरे कम होते जा रहे हैं। गोंद निकालने के बाद गीला गोंद स्थानीय व्यापारियों को बेच दिया जाता है।

2. आधुनिक विधि – इस विधि में मुख्यत: वृक्ष की छाल को खरोंचा जाता है। सलई वृक्षों से गोंद निकालते समय निम्नलिखित सावधानियाँ बरतना चाहिये :–

- टेपिंग/बंध लगाने के लिये कम से कम 90 से.मी गोलाई के वृक्षों का चयन करना चाहिए।
- पहला बंध अक्टूबर माह में लगाना चाहिए।

- टेपिंग पेड़ की गोलाई में करना चाहिये और खाँचे की चौड़ाई 10 से.मी और गहराई 0.5 से.मी होनी चाहिये।
- टेपिंग लगाने के बाद वृक्ष को 20–30 दिनों के लिए छोड़ देना चाहिए।
- लगभग 7–8 दिनों में गोंद का संग्रहण करना चाहिए।
- दोबारा फेशनिंग (कट) लगाते समय चौड़ाई 2 सें.मी. और गहराई 0.5 सें.मी. होनी चाहिए।

प्रसंस्करण

प्रसंस्करण की आवश्यकता गोंद की गुणवत्ता में संग्रहण समय बढ़ानें एवं गोंद का उचित मूल्य प्राप्त करने हेतु होती है।

अधिकांश एकत्र की गई गोंद को सीधे औद्योगिक इकाइयों को बेच दिया जाता है जहाँ इससे बोसबेलिक अम्ल निकाला जाता है। इसका उपयोग औषधि निर्माण में किया जाता है, और बचे हुऐ गोंद को बोरियों मे भरकर रख लिया जाता है। इनका उपयोग हवन में किया जाता है।

सलई प्रसंस्करण विधि

- ☆ संग्रहण के उपरांत गोंद को डलियों में भरकर रखना चाहिए।
- ☆ डलियों में रखने से गोंद के रस का रिसाव आसानी से हो जाता है। जिसे पुन: एकत्रित कर बाजार में बेचा जा सकता है।
- ☆ यदि गोंद को प्रसंस्कृत कर गोलियां बनाकर बाजार में बेचा जाये तो उससे अधिक मूल्य प्राप्त होता है।
- ☆ प्रसंस्करण के दौरान गोंद की छोटी–छोटी गोलियां बनाकर एवं उनको सिलखेड़ी पाउडर में लपेटकर जमीन पर बिछी पॉलीथीन पर रखी जाती है।

सलई गोंद और सिलखेड़ी पाउडर

सलई गोद की गोलियॉ

श्रेणीकरण

गोंद का श्रेणीकरण रंग एवं चमक के आधार पर किया जाता है।

श्रेणियों का विवरण निम्नानुसार है :-

श्रेणियाँ	रंग
प्रथम श्रेणी	बहुत हल्का पीला रंग, चमकदार, पारदर्शी एवं अशुद्धियों से रहित।
द्वितीय श्रेणी	भूरा पीला रंग, कम पारदर्शी, अशुद्धियों से रहित।
तृतीय श्रेणी	अपारदर्शक, भूरा रंग, अशुद्धियों सहित।

ग्रेड–1 | ग्रेड–2 | ग्रेड–3

भंडारण

गीले गोंद को हरसिंगार या बांस की टोकनी में रखना चाहिए और टोकनी के नीचे टीन कर डिब्बा जिसकी सतह पर सिलखेड़ी का पाउडर लगा दिया गया हो रखना चाहिये। इससे निकलने वाला रस (रेजिन) उस पात्र में एकत्र हो जाएगा।

सलई रस निकालने का तरीका

सलई रस

सावधानियाँ

☆ बंध लगाने के लिये मोटे (80 से.मी. से अधिक) वृक्षों का चयन करें। एक समय में सारे वृक्षों से गोंद न निकाले कुछ वृक्षों को छोड़ दें।

☆ जमीन से लगभग 3 फीट की ऊचाई पर पहला बंध लगाना चाहिए।

☆ एक सीजन में बंध की लंबाई 1 मीटर तक होनी चाहिए, उससे ज्यादा नही।

☆ फ्रेशनिंग (दोबारा बंध) 7–8 वें दिन लगाना चाहिए। महीने में 4 से अधिक बंध नहीं लगाना चाहिये।

☆ पहले बंध की चौड़ाई 8–10 से.मी. से ज्यादा नहीं होना चाहिए।

☆ फ्रेशनिंग बंध की चौड़ाई 2.5–3.0 से.मी. से ज्यादा नहीं होना चाहिए।

☆ वर्तमान में सलई गोंद को राख के द्वारा प्रसंस्कृत किया जाता है जो कि एक गलत विधि है।

गोंदों का बाजार

संग्राहक वनों से गोंद एकत्र कर गीला गोंद गांव के व्यापारियों को या स्थानीय बाजार (कराहल) में विक्रय कर देते हैं । व्यापारियों द्वारा इस गोंद को उद्योगों में या प्रसंस्करण एवं ग्रेडिंग कर दिल्ली, मुंबई एवं हैदराबाद के बड़े व्यापारियों को विक्रय कर देते हैं ।उद्योगों द्वारा सलई गोंद से बोसबेलिक एसिड निकालकर देश एवं विदेशों की दवा निर्माण कम्पनियों को विक्रय किया जाता हैं। विगत वर्षो में सलई गोंद के बाजार में वृद्धि निम्नानुसार है:

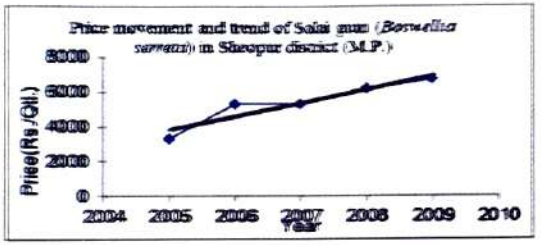

रोपणी एवं रोपण तकनीक

सलई के बीज का संग्रहण मार्च-अप्रैल माह में किया जाता है, जब फलों के गुच्छे 50 प्रतिशत सूख जाते है तथा फटने वाले होते है। हरे गुच्छों को कभी नहीं तोडना चाहिए। फलों के फटने के पश्चात बीजों को फर्श में संग्रहण करें। बीजों को ठंडे पानी से उपचार करके रेत तथा वर्मी कम्पोस्ट के 1:1 मिश्रण में रूट ट्रेनर में या पोलीथीन की थैलियों मे बोना चाहिए। बीजों को उठी हुई क्यारियों में बोवाई करने पर एक वर्ष के बाद पौधों में रूटशकर विकसित होते है, जिनकों उखाड़कर वृक्षारोपण क्षेत्र में जून -जुलाई माह में रोपित किया जा सकता है। पौधों को मवेशी चराई करके एवं खुरों से रौंदकर नुकसान पहुंचाते हैं। इससे उनके कॉलर टूट जाते हैं, जिससे पुनः इनको उगने में कठिनाई होती है।

संपर्क

डा प्रतिभा भटनागर एवं मनीष गोस्वामी

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (म.प्र.)

फोन नं 0761. 2665540, 2666529

सलई

(Boswellia serrata)

सामाजिक आर्थिक एवं विपणन शाखा

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (म. प्र.)